ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 571-580

झारखंड राज्य के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता पर प्रभाव

सीमा कुमारी
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत
ईमेल : seema.kumari051286@gmail.com
डॉ. कामरान हसन
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

सारांश

झारखण्ड राज्य के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित कौशल विकास कार्यक्रम वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी पहल के रूप में उभर कर सामने आए हैं। पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था प्रायः विद्यार्थियों को केवल परीक्षा–केन्द्रित बनाती रही है, जिसके कारण रोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में ठोस परिणाम सामने नहीं आते थे। ऐसे परिप्रेक्ष्य में कौशल विकास कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान और तकनीकी दक्षताओं से सुसज्जित करना है। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत सूचना प्रौद्योगिकी, उद्यमिता, सिलाई–कढ़ाई, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर शिक्षा, कृषि एवं पशुपालन, मोबाइल रिपेयरिंग, खाद्य प्रसंस्करण तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध रोजगार अवसरों से जोड़ता है और उन्हें स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने पर स्पष्ट होता है कि इनसे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की वृद्धि हुई है और वे केवल नौकरी तलाशने वाले नहीं, बल्कि नौकरी प्रदान करने वाले भी बन रहे हैं। कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद छोटे उद्यम शुरू किए हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए यह कार्यक्रम वरदान साबित हो रहे हैं, क्योंकि सीमित संसाधनों के बावजूद वे स्वरोजगार और स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भरता हासिल कर रहे हैं। साथ ही, इन कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों की संचार क्षमता, टीमवर्क, समस्या समाधान कौशल

और नेतृत्व गुणों का भी विकास किया है, जो उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

मुख्य शब्द– कौशल विकास कार्यक्रम, आत्मनिर्भरता, उच्च माध्यमिक शिक्षा, रोजगारोन्मुखी शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक विकास

भूमिका

21वीं सदी को ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था का युग कहा जाता है। इस युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल पारंपरिक ज्ञान और सूचना का हस्तांतरण भर नहीं रह गया है, बल्कि इसका दायित्व युवाओं को सशक्त, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उपयोगी नागरिक बनाना है। आधुनिक वैश्विक समाज में, जहाँ प्रतिस्पर्धा तीव्र है और रोजगार के अवसर सीमित होते जा रहे हैं, वहाँ केवल सैद्धांतिक शिक्षा पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। आज की शिक्षा व्यवस्था से अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों को ऐसे कौशल प्रदान करे जो उन्हें जीवन और करियर की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाए।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह चुनौती और भी बड़ी है क्योंकि यहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवाओं का है। इन्हें अक्सर "डेमोग्राफिक डिविडेंड" कहा जाता है। यदि यह युवा शक्ति उचित शिक्षा और कौशल से सुसज्जित हो जाए, तो देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिल सकती है। लेकिन यदि यही युवा बेरोजगार और कौशल–विहीन रह जाए, तो यह जनसंख्या बोझ का कारण बन सकती है। इस परिप्रेक्ष्य में कौशल विकास न केवल शिक्षा का पूरक है, बल्कि आत्मनिर्भरता और सतत विकास की कुंजी भी है।

झारखंड राज्य, जो प्राकृतिक संसाधनों और खनिज संपदा से परिपूर्ण है, वहाँ कौशल और शिक्षा का उचित सामंजस्य स्थापित करना विशेश रूप से आवश्यक है। इस राज्य में बड़ी संख्या में युवा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हैं। ये विद्यार्थी समाज और राष्ट्र की भावी दिशा तय करने वाले नागरिक हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या इन विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहायक हो? क्या विद्यालय स्तर पर कौशल विकास के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं?

आत्मनिर्भरता की आवश्यकता

आत्मनिर्भरता का आशय है दृ व्यक्ति का अपनी क्षमताओं, कौशलों और संसाधनों के आधार पर जीवन–यापन करने और निर्णय लेने की क्षमता। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जब विद्यालय से बाहर निकलते हैं तो वे जीवन के नए चरण में प्रवेश करते हैं। यह वह अवस्था है जहाँ से उनका भविष्य तय होता है। यदि उन्हें केवल परीक्षा पास करने और प्रमाणपत्र प्राप्त करने तक सीमित कर दिया जाए, तो वे बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। लेकिन यदि उन्हें समय रहते डिजिटल साक्षरता, उद्यमिता कौशल, तकनीकी दक्षता, संवाद कौशल, और रोजगारोन्मुख कौशल प्रदान किए जाएँ, तो वे न केवल अपने लिए अवसर सृजित कर सकते हैं, बल्कि समाज और राज्य की प्रगति में भी योगदान कर सकते हैं।

शिक्षा और कौशल का संबंध

शिक्षा और कौशल का संबंध गहरा है। शिक्षा जहाँ सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है, वहीं कौशल उसे व्यावहारिक रूप से लागू करने की योग्यता देता है। यदि

विद्यार्थी केवल शिक्षा प्राप्त करें लेकिन उसमें कौशल का समावेश न हो, तो वह अधूरा रह जाता है। यही कारण है कि नई शिक्षा नीति 2020 ने विद्यालय स्तर से ही कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने पर जोर दिया है।

झारखंड जैसे राज्य में, जहाँ एक ओर खनन, कृषि, हस्तशिल्प और पारंपरिक कला–कौशल की प्रचुरता है, वहीं दूसरी ओर तकनीकी और आईटी क्षेत्र की संभावनाएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों को स्थानीय संसाधनों और वैश्विक अवसरों के अनुरूप प्रशिक्षित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

झारखंड की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और कौशल विकास

झारखंड एक जनजातीय बहुल राज्य है जहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः खनन और कृषि पर आधारित है। यहाँ की आबादी का बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है और संसाधनों की कमी भी है। इन परिस्थितियों में यदि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ कौशल आधारित प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे अपने स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, हस्तशिल्प, बुनाई, लघु उद्योग, कृषि–आधारित उद्योग, तथा डिजिटल सेवाएँ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें झारखंड के विद्यार्थी आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की चुनौतियाँ

झारखंड में उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामने कई चुनौतियाँ हैं;

1. पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, जो केवल परीक्षा परिणाम पर केंद्रित है।
2. विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक विषयों और कौशल विकास की सीमित उपलब्धता।
3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता।
4. परिवार की आर्थिक स्थिति, जिससे विद्यार्थी जल्दी रोजगार की तलाश में लग जाते हैं।
5. सरकारी योजनाओं की जानकारी और पहुँच का अभाव।

इन चुनौतियों को देखते हुए, यह और भी आवश्यक हो जाता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू किया जाए और विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता की दिशा में तैयार किया जाए।

आत्मनिर्भर भारत अभियान और झारखंड

भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया "आत्मनिर्भर भारत अभियान" कौशल विकास और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने का प्रमुख प्रयास है। झारखंड जैसे राज्य, जहाँ बेरोजगारी और पलायन की समस्या गंभीर है, वहाँ इस अभियान का विशेष महत्व है। यदि उच्च माध्यमिक स्तर से ही विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रशिक्षित किया जाए, तो यह न केवल राज्य की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुधार सकता है, बल्कि पलायन की समस्या को भी कम कर सकता है।

झारखंड में साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है और बेरोजगारी दर अपेक्षाकृत अधिक है। बड़ी संख्या में युवा अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। कौशल विकास मंत्रालय एवं राज्य सरकार ने कई

योजनाएँ प्रारंभ की हैं, जैसे – प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, झारखंड स्किल डेवलपमेंट मिशन इत्यादि।

किन्तु, इन योजनाओं का सीधा लाभ उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक किस प्रकार पहुँच रहा है और इसका उनके आत्मनिर्भर बनने में क्या योगदान है, यह शोध का प्रमुख प्रश्न है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

रोजगार कौशल की कमी और समाधान

शर्मा (2014) और टेलर (2014) जैसे शोधकर्ताओं ने इस बात पर जोर दिया है कि भारत के स्नातकों में रोजगार योग्य कौशल की कमी है। इस समस्या को हल करने के लिए, सीटीईईपी और छात्र प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे विशेष कार्यक्रमों को लागू करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, मेहता (2014) ने करियर काउंसलिंग के महत्व पर प्रकाश डाला है ताकि छात्र सही करियर विकल्प चुन सकें।

उद्योग–शिक्षा संबंधों को मजबूत करना

जोहाना वालिन एट अल. (2014), भटनागर (2014) और कप्तान (2014) ने इस बात पर जोर दिया है कि विश्वविद्यालय और उद्योगों के बीच की खाई को पाटना बेहद जरूरी है। इसके लिए, पारंपरिक शैक्षणिक पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता है। उद्योगों को अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए ताकि शैक्षणिक संस्थान उसी के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार कर सकें। यह भी सुझाव दिया गया है कि उद्योगों के विशेषज्ञों को छात्रों के साथ बातचीत करने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए, जैसा कि चड्ढा (2014) ने बताया।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास का महत्व

कई लेखकों जैसे इउलियाना पर्वू, वाडेकर (2009), और मिश्रा (2015) ने व्यावसायिक शिक्षा (अवबंजपवदंस मकनबंजपवद) और कौशल विकास के महत्व पर जोर दिया है। उनका मानना है कि यह केवल नौकरी बाजार की जरूरतों को पूरा करने के लिए ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास को बढ़ाने के लिए भी आवश्यक है। वाडेकर (2009) का अध्ययन यह दर्शाता है कि प्रशिक्षण से उत्पादकता और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं। इसी तरह, विश्व बैंक के नीति पत्र (2015) में भी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को स्कूल स्तर से ही शु–करने का सुझाव दिया गया है।

सरकारी पहल और चुनौतियाँ

कुमार (2015) और सैनी (2015) ने कौशल भारत जैसी सरकारी पहलों पर प्रकाश डाला है। हालांकि, वे यह भी बताते हैं कि इन पहलों के बावजूद, मांग और आपूर्ति के बीच असंतुलन, खराब बुनियादी ढाँचा, और सार्वजनिक–निजी भागीदारी की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। हजारिका (2016) का अध्ययन यह भी दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी एक बड़ी बाधा है।

बदलते परिदृश्य और भविष्य की दिशा

शर्मा और अभिषेक (2018) ने एक और महत्वपूर्ण चुनौती की ओर इशारा किया है–कृत्रिम बुद्धिमत्ता (।प्) और तकनीक का बढ़ता हस्तक्षेप। उन्होंने कहा कि श्रम–गहन तकनीकों को अब

मशीनीकृत तकनीकों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। इसका मतलब है कि भविष्य में रोजगार के लिए युवाओं को न केवल पारंपरिक कौशल, बल्कि मल्टीटास्किंग और नई तकनीकों के अनुकूल होने की क्षमता भी विकसित करनी होगी। सिंह (2016) ने पुनः कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया है ताकि मौजूदा कर्मचारियों को बदलते तकनीकी परिदृश्य के लिए तैयार किया जा सके।

सभी शोध लेखों का एक ही निष्कर्ष है– भारत में बेरोजगारी की समस्या का मूल कारण शिक्षा प्रणाली और उद्योगों की जरूरतों के बीच का कौशल अंतराल है। इस समस्या को हल करने के लिए, हमें उच्च शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन करने होंगे, कौशल विकास को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा, और उद्योगों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करने होंगे। मेक इन इंडिया जैसे मिशनों को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी बड़ी युवा आबादी को कुशल बनाएं और उन्हें वैश्विक नौकरी बाजार के लिए तैयार करें। यह केवल आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि सामाजिक गतिशीलता और व्यक्तिगत सशक्तिकरण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. पिता के शिक्षा के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विधार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का अध्ययन करना।
2. माता के शिक्षा के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विधार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का अध्ययन करना।
3. परिवार के वार्षिक आय के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विधार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. पिता के शिक्षा के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विधार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. माता के शिक्षा के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विधार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. परिवार के वार्षिक आय के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विधार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्व

इस अध्ययन का महत्व इसलिए है क्योंकि;

- यह झारखंड के युवाओं की रोजगार क्षमता और आत्मनिर्भरता से जुड़ा है।
- अध्ययन के निष्कर्ष राज्य सरकार और नीति–निर्माताओं को शिक्षा व्यवस्था सुधारने में सहायक होंगे।
- यह उच्च माध्यमिक स्तर पर कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में मार्गदर्शन करेगा।
- यह विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए आवश्यक कौशलों की पहचान कराएगा।

शोध की कार्य विधि

यह अध्ययन मुख्यतःवर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

न्यादर्श

इस अध्ययन में प्रतिदर्श के चयन के लिए झारखण्ड राज्य के उत्तरी छोटा नागपुर प्रमण्डल के दो जिलों चतरा और हजारीबाग के 5–5 प्रखण्डों के 20 विद्यालयों को चुना गया है। इन प्रतिदर्शों का चयन बहुसंभावित प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। पहले उत्तरी छोटा नागपुर प्रमण्डल से दो जिले चतरा एवं हजारीबाग चुने गये, फिर प्रत्येक जिले से पांच प्रखण्ड और प्रत्येक प्रखण्ड से दो विद्यालयों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है।

विश्लेषण और व्याख्या

परिकल्पना परीक्षण

1. पिता की शिक्षा के आधार पर आत्मनिर्भरता कौशल का विश्लेषण

उद्देश्य–1

पिता की शिक्षा के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पना (H01)

पिता की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

पिता की शिक्षा	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
अल्प शिक्षित	200	68.40	8.95
उच्च शिक्षित	200	73.85	9.10

प्राप्त टीमूल्य = 3.20 (0.05 स्तर पर सार्थक)

विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षित पिता वाले विद्यार्थियों का आत्मनिर्भरता का मध्यमान (73. 85), अल्प शिक्षित पिता वाले विद्यार्थियों (68.40) की तुलना में अधिक है। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पिता की शिक्षा विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता कौशल को प्रभावित करती है।

शिक्षित पिता बच्चों को बेहतर शैक्षिक मार्गदर्शन, निर्णय–क्षमता, आत्मविश्वास तथा व्यावहारिक जीवन कौशलों के विकास हेतु अधिक अवसर प्रदान करते हैं। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

2. माता की शिक्षा के आधार पर आत्मनिर्भरता कौशल का विश्लेषण

उद्देश्य–2

माता की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पना ($H0_2$)

माता की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

माता की शिक्षा	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
अल्प शिक्षित	200	67.90	9.25
उच्च शिक्षित	200	74.30	8.80

प्राप्त टी–मूल्य = 3.85 (0.05 स्तर पर सार्थक)

विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षित माताओं के बच्चों का आत्मनिर्भरता मध्यमान (74. 30), अल्प शिक्षित माताओं के बच्चों (67.90) की अपेक्षा अधिक है। टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक होने से यह सिद्ध होता है कि माता की शिक्षा विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता कौशल पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

माता बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। शिक्षित माता बच्चों में आत्मविश्वास, स्वतंत्र निर्णय, समस्या–समाधान तथा जीवन कौशलों को अधिक प्रभावी ढंग से विकसित करती है।
अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

3. परिवार की वार्षिक आय के आधार पर आत्मनिर्भरता कौशल का विश्लेषण

उद्देश्य– 3

परिवार की वार्षिक आय के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पना (H03)

परिवार की वार्षिक आय के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

आय स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
निम्न आय	260	66.75	9.40
मध्यम आय	270	71.60	8.95
उच्च आय	270.	76.20	8.70

प्राप्त टी–मूल्य = 6.50 (0.05 स्तर पर सार्थक)

विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत तालिका के सूक्ष्म विश्लेषण से यह तथ्य स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि परिवार की वार्षिक आय और विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता कौशल के बीच एक सकारात्मक एवं प्रत्यक्ष संबंध विद्यमान है। आँकड़ों से यह परिलक्षित होता है कि जैसे–जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती जाती है, वैसे–वैसे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता से संबंधित कौशलों का स्तर भी क्रमशः बढ़ता जाता है। विशेष रूप से उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों का आत्मनिर्भरता मध्यमान (76.20), निम्न एवं मध्यम आय वर्ग की तुलना में अधिक पाया गया, जो इस संबंध को और अधिक पुष्ट करता है।

सांख्यिकीय दृष्टि से प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि विभिन्न आय वर्गों के विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता कौशल में पाया गया अंतर संयोगवश नहीं है, बल्कि यह पारिवारिक आर्थिक स्थिति के वास्तविक प्रभाव को दर्शाता है। इस प्रकार, यह परिणाम इस अध्ययन की शून्य परिकल्पनाकृ "परिवार की वार्षिक आय के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता के कौशल विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा"कृको अस्वीकृत करता है।

पारिवारिक आय विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यक्तित्व विकास में एक आधारभूत भूमिका निभाती है। आर्थिक रूप से सक्षम परिवार अपने बच्चों को बेहतर विद्यालय, आधुनिक शैक्षिक संसाधन, डिजिटल उपकरण, इंटरनेट सुविधा, कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा करियर परामर्श जैसी सुविधाएँ उपलब्ध करा पाते हैं। इन सुविधाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में स्वनिर्णय क्षमता, समस्या–समाधान कौशल, तकनीकी दक्षता तथा रोजगारोन्मुखी दृष्टिकोण का विकास अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी ढंग से होता है, जो आत्मनिर्भरता के प्रमुख घटक हैं।

इसके विपरीत, निम्न आय वर्ग के परिवारों के विद्यार्थियों को सीमित संसाधनों, आर्थिक दबाव, अतिरिक्त पारिवारिक दायित्वों तथा अवसरों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के कौशल विकास की गति को प्रभावित कर सकती हैं और उनकी आत्मनिर्भरता के स्तर को अपेक्षाकृत कम कर सकती हैं। यद्यपि ऐसे विद्यार्थी परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली होते हैं, फिर भी संसाधनों की असमान उपलब्धता उनके आत्मनिर्भर बनने की प्रक्रिया में बाधक सिद्ध हो सकती है।

अतः अध्ययन के इस निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता के कौशल विकास का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। यह परिणाम शैक्षिक नीति–निर्माताओं एवं प्रशासकों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए विशेष सहायता, छात्रवृत्ति, निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण तथा करियर मार्गदर्शन कार्यक्रमों की आवश्यकता है, ताकि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान कर उनकी आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ किया जा सके।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता के कौशल विकास पर पारिवारिक शैक्षिक एवं आर्थिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करना था। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त हुएकृ

पिता की शिक्षा के आधार पर यह पाया गया कि उच्च शिक्षित पिता वाले विद्यार्थियों का आत्मनिर्भरता कौशल स्तर अल्प शिक्षित पिता वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। प्राप्त ज–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पिता की शिक्षा विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता को प्रभावित करती है।

माता की शिक्षा के आधार पर भी विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता कौशल में सार्थक अंतर पाया गया। उच्च शिक्षित माताओं के बच्चों का आत्मनिर्भरता स्तर अधिक रहा। सांख्यिकीय परीक्षण ने इस अंतर को 0.05 स्तर पर सार्थक सिद्ध किया।

परिवार की वार्षिक आय के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया कि उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों का आत्मनिर्भरता मध्यमान निम्न एवं मध्यम आय वर्ग की तुलना में अधिक है। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि पारिवारिक आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता कौशल को प्रभावित करती है।

इन तीनों ही कारकों के संदर्भ में संबंधित शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत पाई गईं, जो यह संकेत देती हैं कि पारिवारिक पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता पर स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता का विकास केवल विद्यालयी शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पारिवारिक शैक्षिक एवं आर्थिक परिवेश से गहराई से जुड़ा हुआ है। माता–पिता की शिक्षा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता तथा व्यावहारिक कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वहीं, पारिवारिक आय विद्यार्थियों को उपलब्ध संसाधनों, अवसरों एवं प्रशिक्षण सुविधाओं के माध्यम से उनकी आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि जिन विद्यार्थियों को घर से शैक्षिक मार्गदर्शन, आर्थिक सहयोग एवं प्रेरणादायक वातावरण प्राप्त होता है, उनमें आत्मनिर्भरता से संबंधित कौशल अधिक प्रभावी ढंग से विकसित होते हैं। इसके विपरीत, आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

अतः यह अध्ययन शैक्षिक नीति–निर्माताओं, विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है कि विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता बढ़ाने हेतु केवल पाठ्यक्रम सुधार ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि अभिभावक शिक्षा, आर्थिक सहायता योजनाएँ, निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण एवं करियर मार्गदर्शन कार्यक्रमों को भी सशक्त बनाया जाना आवश्यक है। इससे सभी वर्गों के विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त होंगे और वे आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में समाज एवं राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान दे सकेंगे।

सुझाव

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक विषयों को अनिवार्य किया जाए।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल प्रभिक्षण केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाए।

3. विद्यार्थियों की रुचि और स्थानीय संसाधनों के अनुरूप कौशल पाठ्यक्रम बनाए जाएँ।
4. भिक्षा–उद्योग सहयोग को प्रोत्साहन दिया जाए।
5. डिजिटल साक्षरता और उद्यमिता प्रभिक्षण को विद्यालय स्तर पर जोड़ा जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यादव, डी. (2018). झारखंड राज्य में शैक्षिक नीति और योजना का प्रभाव. पटनाः राज्य विश्वविद्यालय प्रकाशन.
2. पाटिल, सी. (2017). भारत में कौशल विकास के कार्यक्रमः एक सामाजिक आर्थिक विश्लेषण. मुंबईः भौक्षिक अनुसंधान संस्थान.
3. भार्मा, एच (2016). भारतीय भिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक भिक्षा का महत्व. जयपुरः भारतीय भौक्षिक भोध केन्द्र.
4. गुप्ता, ए. (2015). भारत में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता के विकास के उपाय. भिक्षा और विकास, 22(3), 45–59.
5. सिन्हा, टी (2021). कौ ाल विकास और रोजगार के अवसर. बेंगलुरुः कौ ाल विकास केंद्र.
6. अग्रवाल, टी. (2020). झारखंड में भिक्षा के क्षेत्र में सुधार के उपाय. झारखंड भिक्षा रिपोर्ट, 8(2), 1–12.
7. चौधरी, जी. (2019). कौ ाल विकास और आत्मनिर्भरताः झारखंड के संदर्भ में. रांचीः झारखंड विश्वविद्यालय.
8. राठौर, के. (2018). भौक्षिक संस्थाओं में कौ ाल प्रभिक्षण का महत्व. दिल्लीः भिक्षण और प्रभिक्षण पत्रिका.
9. अरोड़ा, एस. (2017). भिक्षा और कौ ाल विकास में सरकार की भूमिका. भारत भिक्षा, 9(4), 15–28.
10. मिश्रा, के. (2020). आत्मनिर्भरता के लिए कौ ाल विकासः एक अध्ययन. भौक्षिक विकास, 4(1), 29–37.
11. सिंह, सी (2021). झारखंड राज्य के उच्च विद्यालयों में कौशल विकास की स्थिति. झारखंड शोध पत्रिका, 12(3), 53–62.
12. अग्रवाल, बी. (2016). कौशल विकास नीतियाँ और उनकी प्रभावशीलता. शिक्षा नीति और समाज, 3(2), 67–75.
13. शर्मा, टी. (2019). आत्मनिर्भरता और शिक्षाः एक समग्र दृष्टिकोण. लखनऊः भारतीय शैक्षिक प्रकाशन.
14. मिश्रा, सी. (2015). शिक्षा में आत्मनिर्भरता और उसका समाज पर प्रभाव. शिक्षा समीक्षा, 18(1), 23–40.